परिचय

मत्ती: ''शाही सुसमाचार''

उत्पत्ति से मलाकी तक पूरे पुराने नियम में ''आने वाले राजा और परमेश्वर के राज्य की पूर्व सूचना का विषय है'' (उत्पत्ति 3:15; 49:10; 2 शमूएल 7:16; भजन संहिता 2:6-8; मलाकी 3:1)। भविष्यवक्ताओं ने भविष्यवाणी की कि राजा मनुष्य और ईश्वर दोनों होगा (यशायाह 7:14; 9:6, 7; दानिय्येल 7:13, 14)। सपन्याह, के अनुसार ''इस्राएल का राजा यहोवा तेरे बीच में'' होगा (सपन्याह 3:15)। वह ''धर्मी और उद्धार पाया हुआ'' होगा और अन्त में उसके आने पर, पृथ्वी का हर परिवार उसकी आराधना कर पाएगा (जकर्याह 9:9; 14:17)। पतरस ने हमें स्मरण दिलाया कि इनमें से कोई भी व्यक्ति पूरी तरह से नहीं समझता था कि वह क्या भविष्यवाणी कर रहा है (1 पतरस 1:10, 11)।

इस राजा की पूरी पहचान और स्वभाव सुसमाचार के चारों विवरणों में बताया और समझाया गया है। नए नियम की पुस्तकों के प्रबन्ध में पहली पुस्तक मत्ती को आरम्भिक विद्वानों द्वारा एक मत से सुसमाचार का पहला लिखित विवरण माना जाता था।[1] परन्तु कई आधुनिक विद्वानों ने इस विचार को अपना लिया है कि मरकुस पहले लिखा गया था।

यह तथ्य कि मत्ती, मरकुस और लूका (''सुसमाचार के सामानान्तर विवरण'') कई जगह इतने मिलते-जुलते हैं कि साहित्यिक निर्भरता और उनके लिखे जाने के क्रम पर सवाल खड़े हो गए हैं। इस समस्या को आम तौर पर ''समानता की समस्या'' कहा जाता है। इसलिए भाषा के अध्ययन के आधार पर, नये नियम के विद्वान इस बात से सन्तुष्ट होते लगते हैं कि मरकुस पहले लिखा गया। यह विचार पूरी तरह से मरकुस, मत्ती और लूका के बीच पाए जाने वाले सम्बन्धों को पढ़ने पर निर्भर है। हम पक्का नहीं जानते कि पवित्र आत्मा ने हमें सुसमाचार के विवरण देने के लिए मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना को किस प्रकार अगुआई दी। हो सकता है कि वे एक दूसरे पर निर्भर हों; हो सकता है कि उन्होंने एक ही स्रोत का इस्तेमाल किया हो। हो सकता है कि उन्होंने दोनों में से कुछ-कुछ किया हो। ऐसा लगता नहीं है कि हम केवल भाषा के अध्ययन से यह जान पाएं कि सुसमाचार का पहला विवरण कौन सा था।[2]

एक अर्थ में, परमेश्वर ने हमें चार सुसमाचार नहीं दिए; उसने हमें सुसमाचार का केवल एक संदेश दिया। जिसे चार विभिन्न दृष्टिकोणों से प्रस्तुत किया गया। ''सुसमाचार'' के लिए यूनानी शब्द [*euangelion*] का नये नियम में पहली बार इस्तेमाल पृथ्वी पर मसीह के आने और अपने साथ सारी मनुष्य जाति के लिए उद्धार की पेशकश लाने की खुशखबरी के वर्णन के लिए हुआ था। यह हो सकता है कि मरकुस के अपने विवरण के पहले वाक्य में ''सुसमाचार'' शब्द के इस्तेमाल के बाद में मसीह के जीवन के अन्य तीनों विवरणों के लिए यह एक शीर्षक बन गया।

मत्ती को ''शाही सुसमाचार'' के रूप में देखा जा सकता है क्योंकि यह यीशु नासरी को उस राजा के रूप में प्रस्तुत करता है जो आ चुका है। नये नियम में ''राज्य'' (*basileia*) शब्द

162 बार मिलता है।[3] अपने विभिन्न रूपों में केवल मत्ती रचित सुसमाचार में ही इस शब्द का इस्तेमाल 55 बार हुआ है! मत्ती के लिए ''स्वर्ग का राज्य'' एक विलक्षण अभिव्यक्ति है जो बत्तीस बार आता है।[4] ''परमेश्वर के राज्य'' अभिव्यक्ति का इस्तेमाल चाहे सुसमाचार के अन्य विवरणों में बार-बार हुआ है पर मत्ती में इसका इस्तेमाल केवल चार बार हुआ है। नये नियम में कम से कम पैंतीस बार यीशु को ''राजा'' और कम से कम छह बार उसके ''राज्य'' की बात की गई है। मत्ती रचित सुसमाचार में उसे शायद बत्तीस बार ''प्रभु'' (*kurios*) भी कहा गया है। मत्ती सुसमाचार का एकमात्र लेखक था जिसने ''कलीसिया'' (*ekklēsia*) शब्द का इस्तेमाल किया (16:18; 18:17), जिसका अर्थ ''सभा,'' ''मण्डली,'' या ''बुलाए हुए लोग'' हैं। इस शब्द का इस्तेमाल आम तौर पर प्रेरितों के काम में और पत्रियों में हुआ है पर उन पुस्तकों में ''राज्य'' शब्द का इस्तेमाल बिल्कुल नहीं हुआ।

परमेश्वर को पिता के रूप में मत्ती में कई बार बताया गया है। यीशु के सम्बन्ध में ''परमेश्वर का पुत्र'' अभिव्यक्ति सात बार मिलती है। आर. टी. फ्रांस ने इस पदनाम के चार वक्ता बताए हैं:

> सामान्यतया, ... परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु के बारे में भाषा उसके अपने शब्दों में नहीं बल्कि जो कुछ उसके बारे में कहा जाता है उसमें है, चाहे स्वयं परमेश्वर द्वारा (3:17; 17:5), परमेश्वर की आवाज़ निकालते शैतान द्वारा (4:3, 6), अलौकिक ज्ञान वाले दुष्टात्माओं के द्वारा (8:29) या यीशु के बारे में अपनी समझ के गहरा होने आरम्भ होने के रूप में चेलों द्वारा (14:33; 16:16-17) है।[5]

''मनुष्य का पुत्र'' मत्ती की पुस्तक में यीशु के अपने पसन्दीदा पदनाम के रूप में इक्कतीस बार मिलता है। नये नियम में आमतौर पर किसी की मनुष्यता (जैसे यहेजकेल में) पर ज़ोर दिया जाता है, पर यह दानिय्येल 7:13, 14 के भविष्यवाणी के दर्शन में भी मिलता है, जहां मनुष्य के पुत्र सा एक बादलों पर आता है और अति प्राचीन से सदा काल का राज्य प्राप्त करता है।

लेखक और शीर्षक

इस विवरण के वचन के भीतर लेखक का नाम स्पष्ट नहीं है। परन्तु दूसरी शताब्दी के आरम्भ में इस पुस्तक को ''मत्ती के अनुसार सुसमाचार'' के रूप में जाना जाता था। डोनल्ड ए. हैग्नर का मानना था:

> बिना उचित कारण यह मानना कठिन है कि सुसमाचार मत्ती के नाम जुड़ा होगा, क्योंकि उपलब्ध आंकड़े जितना हमें बता सकते हैं, मत्ती प्रेरितों या आरम्भिक कलीसिया के प्रमुख लोगों में से नहीं था (सुसमाचार के विवरणों के बाहर उसका नाम केवल एक बार प्रेरितों 1:13 में मिलता है)।[6]

कोई ठोस प्रमाण नहीं है कि इस पुस्तक का कभी कोई और शीर्षक था या इसे कभी दूसरे लेखक की माना गया हो। यह मानने का हर कारण है कि इस पुस्तक का लेखक प्रेरित मत्ती, ''हलफई का पुत्र'' था (9:9)।

मत्ती चुंगी लेने वाला था कि यीशु ने उसे ''चुंगी की चौकी'' से बुलाया (लूका 5:27)।

सुसमाचार के विवरण में जो उसने लिखे, मत्ती को चाहे ''लेवी'' नहीं कहा गया, परन्तु मरकुस और लूका में ''लेवी'' नाम का इस्तेमाल किया गया है (मरकुस 2:14, 15; लूका 5:27-29)। प्रेरितों के काम सहित इन पुस्तकों में, प्रेरितों के नाम बताते हुए उसे ''लेवी'' नहीं बल्कि ''मत्ती'' ही कहा गया है (मरकुस 3:18; लूका 6:15; प्रेरितों 1:13)।

मत्ती का ''लेवी'' भी कहलाना आवश्यक नहीं कि यह संकेत दे कि वह लेवी के घराने में से था। उसके नाम से ऐसा निष्कर्ष निकालने का काफ़ी प्रमाण नहीं लगता। लेवी लोग प्रसिद्ध थे और आमतौर पर उन्हें सम्मान दिया जाता था, इस कारण ''लेवी'' यहूदियों में एक प्रसिद्ध नाम हो गया था। मसीह के समय में चाहे कई लेवीय याजक भ्रष्ट थे पर यह मानना कठिन है कि मत्ती जैसे व्यक्ति ने नीच माना जाने वाला चुंगी लेने का काम करने के लिए याजकाई के पद को त्याग दिया होगा।

चुंगी लेने वाले के रूप में मत्ती का पूर्व व्यवसाय सुसमाचार का विवरण लिखने की उसकी योग्यता के साथ मेल खाता है। मत्ती जैसा कफ़रनहूम का कोई व्यक्ति ही, जो यूनानी और आरामी भाषा को जानता हो, आंकड़ों के इस्तेमाल और उन्हें लिखने में निपुण हो सकता था। कोई संदेह नहीं कि उसमें यीशु की शिक्षाओं और सेवकाई का वर्णन लिखने की योग्यता थी।[7] कइयों ने अनुमान लगाया है कि मत्ती यीशु के चेलों के दल के लिए ''हिसाब रखने वाले'' के रूप में काम करता था।[8]

वचन

सुसमाचार के मत्ती के विवरण को आम तौर पर ''इब्रानी सुसमाचार'' के रूप में बताया जाता है। कलीसिया के आरम्भिक लेखकों ने मत्ती के मूल में यहूदियों के लिए इब्रानी/आरामी भाषा में लिखे जाने और बाद में यूनानी भाषा में अनुवाद किए जाने के कुछ हवाले छोड़े हैं। यूसबियुस के अनुसार, पपियास ने लिखा है कि ''मत्ती ने इब्रानी भाषा में वचन लिखे हैं।'' ओरिगन ने कहा कि मत्ती का सुसमाचार ''यहूदी धर्म से परिवर्तित होने वालों के लिए तैयार किया गया था और इब्रानी भाषा में प्रकाशित हुआ था।''[9] यूसबियुस ने भी कहा कि सिकन्द्रिया के पैंतेनुस के अनुसार (लगभग ईस्वी 170), बरथलमियु ने मत्ती रचित३2 सुसमाचार की एक इब्रानी प्रति भारत में देखी।[10] इरेनियुस ने लिखा कि ''मत्ती ने इब्रानी लोगों में उनकी उपभाषा में एक लिखित सुसमाचार जारी किया, जबकि पतरस और पौलुस रोम में प्रचार कर रहे थे और कलीसिया की नींव'' रख रहे थे।[11] जेरोम ने लिखा कि मत्ती ने यहूदिया में रहने के समय सुसमाचार का अपना विवरण इब्रानी भाषा में लिखा।[12]

इस विचार के साथ कई समस्याएं देखी गई हैं कि मत्ती को मूलतया इब्रानी/आरामी भाषा में लिखा गया था। पहले तो आरम्भिक मसीही साहित्य में इब्रानी/अरामी भाषा में मत्ती का कोई उद्धरण नहीं है। दूसरा, सप्तत्ति (LXX) से मत्ती के यूनानी धर्मशास्त्र के उद्धरण और यह तथ्य मत्ती के सुसमाचार में मूल में इब्रानी/अरामी भाषा के अनुवाद होने के विरुद्ध तर्क देता है। तीसरा, यूनानी धर्मशास्त्र में शब्दों के कई खेल है, जो यूनानी भाषा में ही हो सकते हैं (6:16; 16:18; 21:41; 24:30)।[13] चौथा, यूनानी धर्मशास्त्र अनुवाद नहीं लगता। लियोन मौरिस ने इस तथ्य को समझा:

> एक ओर तो इस तथ्य से कि प्राचीन काल में व्यापक सहमति पाई जाती है कि मत्ती आरम्भिक सामी लेख था और दूसरा, इस तथ्य से कि जो सुसमाचार हमारे पास है मूल में उसे यूनानी भाषा में लिखा माना जाता था, न कि अनुवाद के रूप में, एक पहेली बन जाती है। हो सकता है कि इसी कारण कुछ विद्वान मानते हैं कि यूनानी भाषा की हमारी मत्ती की पुस्तक मूल इब्रानी या अरामी भाषा का अनुवाद नहीं बल्कि इसका एक नया संशोधन है।[14]

जैक पी. लूईस ने निष्कर्ष निकाला:

> ... इस तथ्य के बावजूद कि चर्च फादर्स मूल में इब्रानी की बात करते तो थे, पर इस यूनानी पुस्तक के उस इब्रानी पुस्तक से सम्बन्ध के कठिन प्रश्न को, जिसकी वे बात करते थे, छोड़ते हुए स्वयं व्यक्तिगत रूप में केवल यूनानी पुस्तक को ही जानते थे और इसी का इस्तेमाल करते थे।[15]

यदि मत्ती का इब्रानी धर्म शास्त्र था तो हमारे पास चर्च फादर्स के दावे को छोड़ इसका और कोई भौतिक प्रमाण नहीं है। इसकी मूल भाषा जो भी हो, यह पुस्तक स्पष्टतया या तो यहूदियों के लिए लिखी गई या उन्हें यह यकीन दिलाने लिए कि मसीह ही मसीहा से जुड़ी उनकी आशाओं का पूरा होना है। मत्ती में बार-बार आने वाली एक अभिव्यक्ति ''यह इसलिए हुआ कि जो वचन भविष्यवक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हो'' (21:4) है। वह ''कहीं-कहीं इब्रानी भाषा के पुराने नियम या कहीं-कहीं यूनानी भाषा के सप्तत्ति अनुवाद का इस्तेमाल करते हुए लगभग 65 बार पुराने नियम से उद्धृत करता या उसकी ओर संकेत करता है।''[16] ये उद्धरण ''मूसा की व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं और भजनों की पुस्तकों'' (लूका 24:44) सहित इब्रानी भाषा वाली बाइबल के हर भाग से लिए गए हैं।

मत्ती में पुराने नियम के हवालों का इस्तेमाल कई प्रकार से हुआ है। कुछ प्रत्यक्ष भविष्यवाणियां हो सकती हैं जो केवल मसीह में ही पूरी होती हैं। अन्य भविष्यवाणियां दोहरे रूप में पूरी हुई हो सकती हैं जिनका पूरा होना पहले उस भविष्यवक्ता के समय में हुआ और फिर उनका और पूरा होना मसीह में हुआ। इसके अलावा कई हवालों का इस्तेमाल प्रतीकात्मक रूप में हुआ है। फ्रांस ने तर्क दिया कि रूप/प्रतिरूप के ढंग के अनुसार पुराने नियम के लोग, घटनाएं और संस्थान जिनमें ''भविष्य का कोई स्पष्ट हवाला नहीं था'' नये नियम में सीधे तौर पर मेल खाते हुए दिए गए हैं।[17]

सुसमाचार का मत्ती का विवरण मसीह की वंशावली को दोहराने के साथ आरम्भ होता है (1:1-17)। अन्यजातियों के लिए उसकी परिवार रेखा में कोई दिलचस्पी नहीं होनी थी, परन्तु यहूदियों के लिए यह विचार करने की गम्भीर बात थी। वास्तव में उनके लिए, लेखक को यीशु के ''दाऊद की सन्तान'' होने का दावा साबित करने के लिए यह बहुत ही आवश्यक था, जिससे वह दाऊद की गद्दी का सही वारिस हो सके।

संगठन

मत्ती मसीह के जीवन और काम को बड़ी ही सुन्दर संगठित और क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत

करता है। पुस्तक को मुख्यतया ग्यारह भागों में बांटा जा सकता है। विवरण के छह भाग जिनमें मुख्यतया यीशु के काम आते हैं,[18] शिक्षा के पांच भागों के साथ बदले जाते हैं:

विवरण:	शिक्षा के खण्ड:
1:1–4:25	5:1–7:27
8:1–9:38	10:1–42
11:2–12:50	13:1–52
13:54–17:27	18:1–35
19:2–22:46	23:1–25:46
26:2–28:20	

शिक्षा का हर भाग ''जब यीशु ये बातें कह चुका'' जैसे एक प्रवर्तनीय कथन के साथ समाप्त होता है (7:28, 29; 11:1; 13:53; 19:1; 26:1)।

आश्चर्यकर्म

मत्ती यीशु द्वारा किए गए बीस विशेष आश्चर्यकर्मों को लिखता है। इनमें से तीन इस विवरण के लिए विलक्षण हैं: दो अन्धे जिन्हें आंखें दी गई थीं (9:27–31), दुष्टात्मा से पीड़ित गूंगे का चंगा होना (9:32, 33) और वह सिक्का जो पतरस को मछली के मुंह में मिला था (17:24–27)। मत्ती के विवरण में दिए गए अन्य आश्चर्यकर्म वे हैं जिनमें विभिन्न प्रकार के रोगों से चंगाई की बात है: एक अनाम कोढ़ी (8:2–4), सूबेदार का सेवक (8:5–13), पतरस की सास (8:14, 15), दुष्टात्मा से पीड़ित गदरेनी मनुष्य (8:28–34), लकवे का एक रोगी (9:2–8), लहू बहने वाली स्त्री (9:20–22), सूखे हाथ वाला आदमी (12:9–13), कनानी स्त्री की बेटी (15:21–28), दुष्टात्मा से पीड़ित लड़का (17:14–21), और यरीहो के निकट दो अंधे (20:29–34)। यीशु ने और कई प्रकार के आश्चर्यकर्म किए: तूफ़ान को थामना (8:23–27), याईर की बेटी को मुर्दों में से जिलाना (9:18–26), पांच हज़ार को खिलाना (14:13–23), पानी पर चलना और तूफ़ान को थामना (14:24–33), चार हज़ार लोगों को खिलाना (15:32–38), और अंजीर के वृक्ष को श्राप देना (21:19–21)। इन सभी को ''सो सब लोगों ने देखा कि गूंगे बोलते और टुंडे चंगे होते और लंगड़े चलते और अंधे देखते हैं, तो अचम्भा करके इस्राएल के परमेश्वर की बड़ाई की'' (15:29–31) शब्दों में संक्षिप्त किया जाता है।

शिक्षाएं और दृष्टांत

सुसमाचार का मत्ती का विवरण यीशु की शिक्षाओं का सबसे विस्तृत विवरण देता है। पुस्तक का कम से कम 60 प्रतिशत भाग यीशु की शिक्षा पर केन्द्रित है। यह हमारे प्रभु के छह बड़े उपदेश देता है जो शिक्षा के पांच भागों में पाए जाते हैं:

1. पहाड़ी उपदेश (अध्याय 5–7);

2. बारहों को यीशु की आज्ञा (अध्याय 10);
3. राज्य के दृष्टांत (अध्याय 13);
4. राज्य में जीवन (अध्याय 18);
5. ग्रन्थियों और फरीसियों को यीशु की डांट (अध्याय 23) और जैतून के पहाड़ पर उसका भविष्यवाणी का उपदेश (अध्याय 24; 25)।[19]

पहाड़ी उपदेश मत्ती के लिए विलक्षण था। लूका में एक मैदानी उपदेश भी है जिसमें कुछ बातें ऐसी ही हैं परन्तु शायद यह वही उपदेश नहीं है (लूका 6:17-49)। सुसमाचार का मत्ती का विवरण अकेला है, जिसमें न्याय के दृश्य दिखाए गए हैं (अध्याय 13; 25)।

दृष्टांतों के वर्गीकरण के ढंग पर निर्भर करते हुए मत्ती कम से कम चौदह दृष्टांत बताता है जिनमें ग्यारह इस विवरण के लिए विशेष हैं। सुसमाचार के अन्य विवरणों से मेल खाते दृष्टांत हैं, बोने वाले का दृष्टांत (13:1-23), राई के बीज का दृष्टांत (13:31, 32), और दाख की बारी का दृष्टांत (21:33-41)। मत्ती के लिए ये दृष्टांत और जंगली बीज का दृष्टांत (13:24-30, 36-43), छिपे हुए खज़ाने का दृष्टांत (13:44), अनमोल मोती का दृष्टांत (13:45, 46), जाल का दृष्टांत (13:47-50), गृहस्थ का दृष्टांत (13:51, 52), निर्दयी सेवक का दृष्टांत (18:23-35), दाख की बारी में किसानों का दृष्टांत (20:1-16), दो बेटों का दृष्टांत (21:28-32), राजा के पुत्र के विवाह का दृष्टांत (22:2-14), दस कुआंरियों का दृष्टांत (25:1-13), और तोड़ों का दृष्टांत (25:14-30) मिलते जुलते हैं।

समय और स्थान

यह तथ्य कि पहली और दूसरी आरम्भिक सदियों तक मसीही दस्तावेज़ों में मत्ती को बार-बार दोहराया गया या इसका संकेत मिला, मज़बूत प्रमाण है कि सुसमाचार की यह पुस्तक पहली सदी में कहीं लिखी गई थी।[20] पर्याप्त प्रमाण या धर्मसिद्धांत की कमी होने के बावजूद यह मानना तर्कसंगत है कि मत्ती की पुस्तक 70 ईस्वी में यरूशलेम और इसके मन्दिर के विनाश से पहले लिखी गई थी। मत्ती के लिखे जाने के समय तक, स्पष्टतया दोनों ही थे (24:2, 15-28)। इसके अलावा मत्ती 24 में यरूशलेम के आने वाले विनाश से स्पष्ट सम्बन्ध इस विचार को समर्थन देता है। मत्ती द्वारा यीशु की ''पहाड़ों में भाग जाने'' और ''प्रार्थना किया करो; कि तुम्हें जाड़े में या सब्त के दिन भागना न पड़े'' (24:16, 20) की शिक्षाएं मिलाना अनावश्यक होता यदि नगर पहले से नष्ट हो गया होता। यदि यरूशलेम पहले ही नष्ट हो चुका होता तो निश्चय ही मत्ती उस तथ्य का उल्लेख करता।

इरेनियुस ने इस बात की पुष्टि की कि सुसमाचार का मत्ती का विवरण पतरस और पौलुस के रोम में प्रचार करने के समय लिखा गया था।[21] यदि उसकी बात को माना जाए तो यह तिथि 60 के दशक के आरम्भ में बनती है। जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे ने यह समय 42 ईस्वी और 58 ईस्वी के बीच तय किया है। उसने तर्क दिया कि मत्ती पहले लिखा गया था तो यह लूका के लिखे जाने से पहले था, जिसे उसने 58-60 ईस्वी में कैसरिया में पौलुस की कैद के समय बताया।[22]

यूसबियुस ने इसका सम्बन्ध मत्ती के फलस्तीन से जाने और कहीं और सुसमाचार सुनाने को तैयार होने के समय मत्ती से इन्हें उन बातों को जिनका वह प्रचार कर रहा था इब्रानी भाषा में

लिख दिया।[23] परम्परा से यह सुझाव मिलता है कि मत्ती ने यीशु के ऊपर उठाए जाने के कई साल बाद तक फलस्तीन में सेवकाई की और फिर रोमी साम्राज्य के इलाकों में फैले हुए बिखरे पड़े यहूदियों में मिशनरी यात्राएं कीं। परम्परा उसके लेखन को फारस (आधुनिक ईरान), इथोपिया, सीरिया और यूनान के साथ भी जोड़ती है।

परन्तु कोई ठोस प्रमाण नहीं है कि मत्ती ने फलस्तीन के बाहर रहते हुए लिखा हो, चाहे बी. एच. स्ट्रीटर का प्रस्ताव है कि मत्ती की पुस्तक सीरिया के अन्ताकिया में लिखी गई, इसे व्यापक रूप से माना गया है।[24] मत्ती की पुस्तक के समय के बारे में जानने के लिए विलियम हैंड्रिक्सन ने एक अच्छी बात की है:

> जहां तक आरम्भ के समय और स्थान की बात है उसमें बहुत अनिश्चितता है। इब्रानी भाषा के मत्ती के पुराने नियम की जानकारी और इब्रानी पत्रियों तक उसकी पहुंच इसके समय को आराधनालय से सम्बन्ध टूटने पर *तिथि* के लिए बुलाना हो सकता है, जहां वैसी पत्रियां रखी जाती थीं जो अभी पूरी नहीं हुईं और *स्थान* या *सामान्य क्षेत्र* के रूप में फलस्तीन लिए जहां इसे लिखा गया। ... मैं ईस्वी 63-66 को शायद अधिक दूर नहीं मानता। यह *अधिक* पहले नहीं हो सकता था, क्योंकि 27:8 और 28:15 से संकेत मिलता है कि कलवरी के समय से काफ़ी समय बीत चुका था।[25]

उद्देश्य

''सुसमाचार के इस विवरण का उद्देश्य क्या है?'' के प्रश्न का उत्तर देते हुए हैंड्रिक्सन ने यह समीक्षा की:

> 1. अंधकार के राज्य से ज्योति के राज्य में *बदलना:* उन यहूदियों का मन परिवर्तन जिन्हें अभी मूल आत्मिक परिवर्तन का अनुभव नहीं हुआ। इन्हें उन बड़ी आशिषों का स्मरण कराना आवश्यक है जो उन्हें दी गई थी, और परमेश्वर की बुलाहट पर ध्यान देने से इनकार करने के गम्भीर परिणामों को भी (10:5 से; 11:25-29; 23:37-39)।
>
> 2. *स्वभाव का बदलना:* उन (अधिकतर) यहूदियों का जिन्होंने आत्मा की सामर्थ से पहले ही अपने आप को मसीह को दे दिया है, जीवन का नया होता रहना है। इनमें दिखाया गया है कि उन्हें दूसरों के लिए आशीष बनने के लिए अर्थात स्वर्गीय पिता की महिमा के लिए किस प्रकार से आचरण करना चाहिए (4:19; 5:16, 43-48; 6:19 से; 7:1 से, 24-27 आदि)।
>
> 3. विरोधियों के कड़े आक्रमण के विरुद्ध परमेश्वर की सच्चाई का *समर्थन* (5:17 से; 6:2 से; अध्याय 12; 13:10 से, 54-58; 15:1-20; 16:1-4; अध्याय 23; आदि)।
>
> 4. सब जातियों में *सुसमाचार सुनाया जाना* (8:5-13; 15:21-28; 28:16-20)।[26]

प्राप्त करने वाले

सुसमाचार के इस विवरण के प्राप्तकर्त्ताओं के प्रश्न का उत्तर आंशिक रूप में पुस्तक के शीर्षक की चर्चा में दिया गया है, परन्तु अब इस प्रश्न पर और विस्तार से देखते हैं।

इस पुस्तक का उद्देश्य मुख्यतया यह साबित करना था कि यीशु नासरी ही वह मसीहा है जिसकी भविष्यवाणी पुराने नियम में की गई थी, इस कारण यह मुख्यतया यहूदी पाठकों के लिए किसी यहूदी द्वारा ही लिखा गया होगा। मत्ती ने यहूदियों को यकीन दिलाने के लिए कि यीशु ही मसीह था पुराने नियम की उन भविष्यवाणियों का इस्तेमाल किया है जिन्हें यीशु ने पूरा किया था। लेखक ने यीशु के मसीहा होने की वास्तविकता को समझाने के लिए एक वाक्यांश, या इससे मिलता-जुलता एक और वाक्यांश बार-बार इस्तेमाल किया: ''यह सब कुछ इसलिए हुआ कि जो वचन प्रभु ने भविष्यवक्ता के द्वारा कहा था वह पूरा हो'' (1:22; देखें 2:15, 17, 23; 3:3; 4:14; 8:17; 11:10, 13; 12:17; 13:14, 35; 15:7; 21:4, 42; 26:31, 56; 27:9)।

इस विचार का कि मत्ती मुख्यतया यहूदी श्रोताओं के लिए लिखा गया था समर्थन करती एक और बात वंशावली है जिससे मसीह के दाऊद के द्वारा अब्राहम से सम्बन्ध का पता चलता है (1:1-17)। यहूदियों के लिए वंशावलियों का बहुत अधिक महत्व था, परन्तु अन्यजातियों को उनमें इतनी दिलचस्पी नहीं थी। मसीह चाहे परमेश्वर था, पर आश्चर्यकर्म के द्वारा गर्भ में आने से वह मनुष्य बन गया। कुंवारी मरियम से जन्म लेकर वह शाही वंश की एक लम्बी पारिवारिक रेखा से आया था। वह ''अब्राहम की सन्तान'' था और इसलिए वाचा की सन्तान था। वह ''दाऊद की सन्तान'' भी था जिसने उसे इस्राएल के सिंहासन का सही वारिस बना दिया। ''दाऊद की सन्तान'' शब्द का इस्तेमाल सुसमाचार में आगे मसीहा के पद के रूप में हुआ है (9:27; 12:23; 15:22; 20:30, 31; 21:9, 15; 22:42)।

यह तथ्य कि मत्ती के पाठक मुख्यतया यहूदी थे, इब्रानी/अरामी भाषा के शब्दों से और पता चलता है जिनकी व्याख्या नहीं की गई। उदाहरण के लिए उसने यह मान लिया कि उन्हें ''यीशु'' के लिए इब्रानी नाम के अर्थ का पता ही होगा (1:21)। मत्ती ने अर्थ नहीं बताए (''प्रभु बचाता है''), इसलिए अन्यजाति लोग शब्दों के इस खेल को नहीं समझ पाते (''क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा'') मत्ती को यहूदी प्रथाओं की व्याख्या करने की आवश्यकता नहीं थी। उदाहरण के लिए उसने यह मान लिया कि उसके यहूदी पाठकों को हाथ धोने की परम्परा की समझ होगी (15:2), जबकि मरकुस ने अपने अन्यजाति पाठकों के लिए इसे विस्तार में समझाया (मरकुस 7:3, 4)। मत्ती ने भौगोलिक विवरणों को भी छोड़ दिया जो फलस्तीन से परिचित यहूदी पाठकों के लिए आवश्यक नहीं थे (देखें 24:3; मरकुस 13:3)।

सुसमाचार के इस विवरण के यहूदी स्वभाव के और प्रमाणों में यहूदियों के उद्धार के लिए यीशु की चिन्ता (10:5, 6; 15:24), व्यवस्था के प्रति लेखक का व्यवहार (5:17-20) और ग्रन्थियों और फरीसियों के प्रति उसका व्यवहार शामिल है। 23:2, 3 में चाहे उन्हें अधिकार नहीं दिया गया पर उसी अध्याय में उन्हें अपने कपट के लिए दोषी ठहराया गया (23:13-33)।

मत्ती चाहे मुख्यतया यहूदियों के लिए लिख रहा था पर उसने अन्य जातियों को निकाला नहीं (2:1-12; 4:15, 16; 8:5-13; 10:18; 12:18, 21; 15:21-28; 24:14; 28:19)। रॉबर्ट एम. ग्रांट के शब्दों का इस्तेमाल करें तो, ''मत्ती एक मसीही व्यक्ति है जिसे मालूम है कि सुसमाचार केवल यहूदियों के लिए ही नहीं बल्कि अन्यजातियों के लिए भी था-या यह कि 'पहले यहूदी के लिए और फिर अन्यजाति के लिए भी' (रोमियों 1:16)।''[27]

और कहा जा सकता है कि मत्ती ने सुसमाचार का अपना विवरण मसीही युग में सब लोगों

के लिए लिखा, क्योंकि उसने घोषित किया कि यीशु ही मसीहा और मनुष्य का पुत्र, मुख्यतया अपने राज्य अर्थात कलीसिया के ऊपर प्रभु है।

रूपरेखाएं

मत्ती की विभिन्न रूपरेखाओं का प्रस्ताव दिया गया है, जिनमें प्रत्येक रूपरेखा पुस्तक के अलग पहलू पर ज़ोर देती है।[28]

I. परिचय (1:1–4:11)
II. गलील में सेवकाई (4:12–13:58)
III. गलील के आस पास के इलाकों में सेवकाई (14:1–16:12)
IV. यरूशलेम में जाना (16:13–20:34)
V. यरूशलेम में सामना (21:1–25:46)
VI. क्रूसारोहण और पुनरुत्थान (26:1–28:20)

पहले चर्चा किए गए संगठन के नमूने से सम्बन्धित एक रूपरेखा है, जिसके ग्यारह भाग हैं।[29]

I. यीशु का एक परिचय (1–4)
II. यीशु की मांगें: पहाड़ी उपदेश (5–7)
III. इस्राएल के लिए यीशु के काम (8; 9)
IV. प्रेरितों को भी यीशु की आज्ञा (10)
V. इस्राएल का यीशु को ठुकराना (11; 12)
VI. इस्राएल को ठुकराए जाने पर राज्य के दृष्टांतों की व्याख्या (13)
VII. परमेश्वर के नये लोग, कलीसिया (14–17)
VIII. राज्य में जीवन: क्षमा और अनुशासन (18)
XI. दुख का आरम्भ (19–22)
X. यरूशलेम का न्याय और द्वितीय आगमन (23–25)
XI. क्रूसारोहण और पुनरुत्थान (26–28)

इस टीका में इस्तेमाल की गई रूपरेखा में यीशु के राजा होने के साथ-साथ उसके जीवन पड़ावों पर भी ज़ोर दिया गया है:

I. राजा यीशु मसीह का जन्म और आरम्भिक जीवन (1:1–4:11)
II. राजा की सेवकाई का आरम्भ (4:12–10:42)
III. राजा की सेवकाई पर प्रतिक्रिया (11:1–12:50)
IV. राजा की सेवकाई जारी रहती है (13:1–18:35)
V. राजा का क्रूस की ओर जाना (19:1–25:46)
VI. राजा की गिरफ्तारी, पेशियां और क्रूसारोहण (26:1–27:66)
VII. राजा का पुनरुत्थान और कमीशन (28:1–20)

टिप्पणियां

[1]यूसबियुस *एक्लेस्यिटिकल हिस्ट्री* 3.24.6–7; 3.39.16; 6.25.4–6; इरेनियुस *अगेंस्ट हेरिसिस* 3.1.1. अगस्टिन ने लिखा, ''मरकुस [मत्ती] से बहुत मेल खाता लिखता है और उसके सहायक और संक्षिप्तकर्त्ता की तरह लगता है'' (अगस्टिन *हारमनी ऑफ़ द गॉस्पल्स* 1.2.4)। [2]मरकुस की प्राथमिकता के लिए प्रमाण की एक मानक प्रस्तुति बी. एच. स्ट्रीटर, *द फोर गॉस्पल्स: ए स्टडी ऑफ़ ओरिजन्स* (लंदन: मौरिसन एंड गिब्ब, 1924; रिप्रिंट, लंदन: मैक्मिलन एंड कं., 1953), 151–98 में दी गई है। इस विचार को चुनौतियों के लिए देखें विलियम आर. फारमर, *द सिनोपटिक प्रॉब्लम* (न्यू यॉर्क: मैकमिलन कं., 1964)। फारमर ने मत्ती की प्राथमिकता का तर्क दिया। *डिक्शनरी ऑफ़ जीज़स एंड द गॉस्पल्स,* संपा. जोएल बी. ग्रीन एंड स्कॉट मैकनाइट (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1992), 784–92 में रॉबर्ट एच. स्टेन, ''सिनोपटिक प्रॉब्लम'' भी देखें। [3]जब तक कहा न जाए, शब्दों और वाक्यांशों की गिनती अकॉर्डेंस®, © 2003, ओकट्री सॉफ्टवेयर का इस्तेमाल करते हुए यूनानी धर्मशास्त्र पर आधारित हैं। [4]''स्वर्ग'' शब्द का इस्तेमाल यहूदियों द्वारा आम तौर पर परमेश्वर की बात करने के गोल मोल ढंग अर्थात घुमा फिराकर कहने के रूप में किया जाता था। [5]आर. टी. फ्रांस, *द गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 47. [6]डोनल्ड ए. हैग्नर, *मैथ्यू 1–13,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 33ए (डलास: वर्ड बुक्स, 1993), lxxvi. [7]वही, 12. [8]फ्रांस, 33. [9]यूसबियुस *एक्लेसियिसिटकल हिस्ट्री* 3.39.16; 6.25.4. [10]वही, 5.10.3.

[11]इरेनियुस *अगेंस्ट हेरेसीस* 3.1.1. [12]जेरोम *लाइव्ज़ ऑफ़ इलस्ट्रियस मेन* 3; *प्रिफेस टू मैथ्यू*। [13]जैक पी. लुईस, *द गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* भाग 1, द लिविंग वर्ड कमैंट्री (ऑस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976), 13. [14]लियोन मौरिस, *द गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू ,* पिल्लर कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1992), 13. [15]लूईस, 14. [16]हैनरी क्लेरंस थियसन, *इंट्रोडक्शन टू द न्यू टैस्टामैंट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1943), 138. [17]फ्रांस, 40. [18]कई बार यीशु की शिक्षाओं में विवरणात्मक भाग भी होते हैं। [19]अध्याय 23 और 24 के उपदेशों में एक मज़बूत सम्बन्ध है। यीशु ने यरूशलेम के विनाश को ध्यान में रखते हुए (अध्याय 24) फरीसियों पर ''हाय'' कही (अध्याय 23)। फरीसियों को डांट के अन्त में, यीशु ने कहा, ''देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिए उजाड़ छोड़ा जाता है'' (23:38)। [20]*1 क्लेमेंट* 13.2; *2 क्लेमेंट* 3.2; 4.2; *डिडेके* 1.2–5; 3.7; 7.1; 8.2; 9.5; 13.2; इगनेशियस *समिरनेयन्स* 1.1; *पोलीकार्प* 2.2; *बरनबास* 4.14; 5.9; पोलीकार्प *फिलिपियंस* 2.3; 7.2.

[21]इरेनियुस *अगेंस्ट हेरेसिस* 3.1.1. [22]जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे, *द न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री,* अंक 1, *मैथ्यू एण्ड मार्क* (पृष्ठ नहीं, 1875; रिप्रिंट, डिलाइट, आरकैंसा: गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 9–10. मैक्गार्वे का लूका के लिए तिथि निर्धारण इस तथ्य पर आधारित था कि लूका-प्रेरितों के काम दो भागों वाली पुस्तक है (लूका 1:1–4; प्रेरितों 1:1, 2)। प्रेरितों के काम की पुस्तक की समाप्ति लगभग 61–63 ईस्वी में रोम में पौलुस की नज़रबन्दी के साथ होती है (प्रेरितों 28:30, 31) इसलिए यह मान लिया जाता है कि लूका ने उस समय प्रेरितों के काम पूरी कर ली थी। सुसमाचार का लूका का विवरण प्रेरितों के काम से थोड़ा पहले लिखा गया था। [23]युसबियूस *एक्लेस्यिटिकल* हिस्ट्री 3.24.6. [24]स्ट्रीटर, 502. [25]विलियम हैंड्रिक्सन, *न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री: एक्सपोज़िशन ऑफ़ द गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1973), 97. [26]वही, 98. [27]रॉबर्ट एम. ग्रांट, *ए हिस्टोरिकल इंट्रोडक्शन टू द न्यू टैस्टामेंट* (न्यू यॉर्क: साइमन एंड शुस्टर, 1972), 130. [28]फ्रांस, 58 से लिया गया। [29]*दि फोर. गॉस्पल्स* 1992, संपा. एफ़. वैन सेगब्रोक, और वहीं और (ल्यूवन: ल्यूवन यूनिवर्सिटी प्रैस, 1992), 1208 में डेल सी. एलिसन, जूनि., ''मैथ्यू: स्ट्रक्चर, बायोग्राफिकल इम्पल्स एंड द *इमिटेशियो क्रिस्टी*'' से लिया गया।

विस्तृत रुपरेखा

I. राजा अर्थात यीशु मसीह का जन्म और आरम्भिक जीवन (1:1-4:11)
   क. अध्याय 1: यीशु का जन्म
      1. यीशु मसीहा की वंशावली (1:1-17)
      2. यूसुफ के पास घोषणा और कुंआरी से जन्म (1:18-25)
   ख. अध्याय 2: यीशु के आरम्भिक वर्ष
      1. ज्योतिषियों का आना (2:1-12)
         क. ज्योतिषियों का यरूशलेम में पहुंचना (2:1, 2)
         ख. हेरोदेस का धार्मिक अगुओं का बुलाना (2:3-6)
         ग. ज्योतिषियों के साथ हेरोदेस की गुप्त मीटिंग (2:7, 8)
         घ. ज्योतिषियों का बैतलहम में पहुंचना (2:9-12)
      2. यीशु को बचाना (2:13-23)
         क. मिस्र में जाना (2:13-15)
         ख. हेरोदेस का क्रोध (2:16-18)
         ग. नासरत में लौटना (2:19-23)
   ग. अध्याय 3: यीशु के आने की तैयारी और उसका बपतिस्मा
      1. यीशु का अग्रदूत (3:1-12)
      2. यीशु का बपतिस्मा (3:13-17)
   घ. अध्याय 4: मसीह की परीक्षाएं (4:1-11)

II. राजा की सेवकाई का आरम्भ (4:12-10:42)
   क. अध्याय 4 (क्रमश:): यीशु की सेवकाई का एक परिचय (4:12-25)
      1. कफरनहूम में ठिकाना (4:12-17)
      2. आरम्भिक चेलों को बुलाहट (4:18-22)
      3. गलील की आरम्भिक सेवकाई (4:23-25)
   ख. अध्याय 5: पहाड़ी उपदेश, भाग 1
      1. धन्य वचन (5:1-12)
      2. नमक और ज्योति (5:13-16)
      3. व्यवस्था का पूरा होना (5:17-20)
      4. क्रोध और हत्या (5:21-26)
      5. व्यभिचार (5:27-30)
      6. तलाक (5:31, 32)
      7. शपथ खाना (5:33-37)
      8. बदला (5:38-42)
      9. शत्रुओं में प्रेम (5:43-48)
   ग. अध्याय 6: पहाड़ी उपदेश, भाग 2

1. सामान्य चेतावनी (6:1)
2. दान (6:2-4)
3. प्रार्थना करना (6:5-15)
4. उपवास रखना (6:16-18)
5. धन जमा करना (6:19-21)
6. स्पष्ट दर्शन (6:22, 23)
7. स्वामियों की पसन्द (6:24)
8. चिन्ता पर काबू पाना (6:25-34)

घ. अध्याय 7: पहाड़ी उपदेश, भाग 3

1. सच्चा न्याय (7:1-6)
2. प्रार्थना में बने रहना (7:7-11)
3. सुनहरा नियम (7:12)
4. अन्तिम ताड़नाएं (7:13-27)
   क. दो अलग-अलग मार्ग (7:13, 14)
   ख. वृक्षों की दो किस्में और झूठे नबियों का फल (7:15-20)
   ग. दो प्रकार के चेले (7:21-23)
   घ. दो प्रकार के मकान बनाने वाले (7:24-27)
5. भीड़ का आश्चर्य (7:28, 29)

ङ. अध्याय 8, 9; उसके आश्चर्य कामों की सिफ़ारिशें

1. आश्चर्यकर्मों का पहला समूह (8:1-17)
   क. कोढ़ी को चंगाई (8:1-4)
   ख. सूबेदार के सेवक की चंगाई (8:5-13)
   ग. पतरस की सास की चंगाई (8:14, 15)
   घ. यीशु की चंगाई की समीक्षा (8:16, 17)
2. शिष्यता का दाम (8:18-22)
3. आश्चर्यकर्मों का दूसरा समूह (8:23-9:8)
   क. तूफ़ान को शांत करना (8:23-27)
   ख. दुष्ट आत्मा से ग्रस्त दो लोगों की चंगाई (8:28-34)
   ग. लकवे के रोगी की चंगाई (9:1-8)
4. शिष्य बनने की बुलाना (9:9-17)
   क. मत्ती को बुलाहट (9:9)
   ख. पापियों को यीशु का निमन्त्रण (9:10-13)
   ग. शिष्यता और उपवास (9:14-17)
5. आश्चर्यकर्मों का तीसरा समूह (9:18-34)
   क. लहू बहने वाली स्त्री की चंगाई और याइर की बेटी को जिलाना (9:18-26)

ख. दो अन्धों को चंगाई देना (9:27-31)
ग. दुष्ट आत्मा से पीड़ित एक गूंगे की चंगाई (9:32-34)
6. यीशु के काम का सार (9:35-38)

च. अध्याय 10: उसके दूत, उनका मिशन और संदेश
1. उसका बारह प्रेरितों को बुलाना (10:1-4)
2. उसकी सीमित आज्ञा (10:5-15)
3. उसकी चेतावनियां (10:16-23)
4. उसके और निर्देश (10:24-42)

III. राजा की सेवकाई पर प्रतिक्रिया (11:1-12:50)

क. अध्याय 11: लोगों द्वारा जिन्होंने उसके काम को देखा
1. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला और यीशु (11:1-19)
2. अपश्चात्तापी नगर (11:20-24)
3. यीशु की प्रार्थना और उसका बड़ा निमन्त्रण (11:25-30)

ख. अध्याय 12: फरीसियों द्वारा
1. सब्त के प्रश्न (12:1-14)
2. एक अन्तराल: यीशु का एकांतवास (12:15-21)
3. यीशु के अधिकार को चुनौती (12:22-37)
4. एक चिह्न की मांग (12:38-45)
5. उपसंहार: यीशु के साथ सच्चा रिश्ता (12:46-50)

IV. राजा की सेवकाई जारी रहती है (13:1-18:35)

क. अध्याय 13: राज्य के दृष्टांत
1. बोने वाला का दृष्टांत (13:1-9)
2. दृष्टांतों का उद्देश्य (13:10-17)
3. बोने वाले के दृष्टांत की व्याख्या (13:18-23)
4. तीन दृष्टांत (13:24-33)
क. जंगली बीज (13:24-30)
ख. राई का बीज (13:31, 32)
ग. खमीर (13:33)
5. दृष्टांतों का उद्देश्य (13:34, 35)
6. जंगली बीज की व्याख्या (13:36-43)
7. तीन और दृष्टांत (13:44-50)
क. छिपा हुआ खज़ाना (13:44)
ख. अनमोल मोती (13:45, 46)
ग. जाल (13:47-50)

8. एक अन्तिम दृष्टांत: गृहस्थ (13:51, 52)
9. नासरत में ठुकराया जाना (13:53-58)[1]

ख. अध्याय 14: यीशु की सेवकाई पर और प्रतिक्रिया (भाग 1)
1. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की मृत्यु (14:1-12)
   क. यीशु के बारे में हेरोदेस का गलत विचार (14:1, 2)
   ख. यूहन्ना की गिरफ्तारी और मृत्यु का वर्णन (14:3-12)
2. पांच हज़ार को खिलाना (14:13-21)
   क. यीशु का निकलना (14:13, 14)
   ख. यीशु का भीड़ को खिलाना (14:15-21)
3. पानी के ऊपर चलना (14:22-33)
   क. यीशु अकेले प्रार्थना करता है (14:22, 23)
   ख. यीशु पानी पर चलता है (14:24-27)
   ग. पतरस पानी पर यीशु के पास आता है (14:28-33)
4. अतिरिक्त चंगाइयां (14:34-36)

ग. अध्याय 15: यीशु की सेवकाई पर और प्रतिक्रिया (भाग 2)
1. फरीसियों के साथ झगड़ा (15:1-20)
   क. मनुष्य की बनाई परम्पराएं बनाम परमेश्वर की व्यवस्था (15:1-9)
   ख. वास्तविकता अशुद्धता (15:10-20)
2. कनानी स्त्री का विश्वास (15:21-28)
3. अन्यजातियों में स्वीकार किया जाना (15:29-39)
   क. यीशु का भीड़ को चंगाई देना (15:29-31)
   ख. यीशु का चार हज़ार को खिलाना (15:32-39)

घ. अध्याय 16: यीशु की सेवकाई पर और प्रतिक्रिया (भाग 3)
1. चिह्न की लोगों की इच्छा (16:1-4)
2. अपने चेलों को यीशु की चेतावनी (16:5-12)
3. अच्छा अंगीकार और यीशु की घोषणा कि वह अपनी कलीसिया बनाएगा (16:13-20)
4. क्रूस का निकट आना और यीशु का अपनी निकट आ रही मृत्यु की पहली घोषणा (16:21-23)
5. शिष्य बनने की कीमत की यीशु की घोषणा (16:24-27)
6. यीशु की प्रतिज्ञा कि वहां कुछ लोग राज्य को देखेंगे (16:28)

ङ. अध्याय 17: यीशु की सेवकाई पर और प्रतिक्रिया (भाग 4)
1. रूपान्तर (17:1-13)
   क. पहाड़ पर यीशु का महिमा में आना (17:1-8)
   ख. एलिय्याह के बारे में चेलों का प्रश्न (17:9-13)
2. दुष्ट आत्मा से पीड़ित पुत्र की चंगाई (17:14-21)

क. यीशु का लड़के को चंगाई देना (17:14-18)
ख. चेलों की नाकामी के लिए यीशु की सफ़ाई (17:19-21)
3. अपनी निकट मृत्यु की यीशु की दूसरी घोषणा (17:22, 23)
4. कर चुकाना (17:24-27)

च. अध्याय 18: राज्य में रिश्ते
1. राज्य में बड़ा होना (18:1-4)
2. ठोकर लगने वाले बनने के विरुद्ध चेतावनी (18:5-9)
3. खोई हुई भेड़ का दृष्टांत (18:10-14)
4. झगड़ने निपटाना (18:15-20)
5. निर्दयी सेवक का दृष्टांत (18:21-35)

V. राजा का क्रूस की ओर जाना (19:1-25:46)

क. अध्याय 19: पिरिया और यहूदिया में यीशु की सेवकाई (भाग 1)
1. तलाक पर सवाल पूछे जाने (19:1-12)
क. यीशु का पिरिया में जाना (19:1, 2)
ख. फरीसियों का प्रश्न (19:3-9)
ग. चेलों का जवाब (19:10-12)
2. बच्चों को आशीष देना (19:13-15)
3. धन और शिष्य बनने पर शिक्षा (19:16-30)
क. धनी जवान हाकिम का प्रश्न (19:16-22)
ख. यीशु का मूल्यांकन (19:23-26)
ग. प्रेरितों के बलिदान (19:27-30)

ख. अध्याय 20: पिरिया और यहूदिया में यीशु की सेवकाई (भाग 2)
1. दाख की बारी में मज़दूरों का दृष्टांत (20:1-16)
2. अपनी निकट मृत्यु की यीशु की तीसरी घोषणा (20:17-19)
3. राज्य में बड़ा होना (20:20-28)
4. दो अन्धों को आंखें देना (20:29-34)

ग. अध्याय 21: यीशु यरूशलेम में: विवाद
1. विजयी प्रवेश (21:1-11)
क. तैयारी (21:1-7)
ख. स्वागत (21:8-11)
2. मन्दिर को शुद्ध करना (21:12, 13)
3. यरूशलेम में चंगाई के अन्तिम आश्चर्यकर्म (21:14-17)
4. अंजीर के वृक्ष को श्राप देना (21:18-22)
5. यीशु के अधिकार को चुनौती (21:23-27)
6. दृष्टांतों की एक शृंखला (21:28-46)

क. दो पुत्रों का दृष्टांत (21:28-32)

ख. गृहस्वामी और दाख की बारी का दृष्टांत (21:33-46)

घ. अध्याय 22: यीशु यरूशलेम में: उसके विरोधी

1. दृष्टांतों की शृंखला की समाप्ति: राजा के पुत्र के विवाह का दृष्टांत (22:1-14)
2. अपने शत्रुओं को यीशु के उत्तर (22:15-46)

क. कर देने पर प्रश्न (22:15-22)

ख. पुनरुत्थान पर प्रश्न (22:23-33)

ग. सबसे बड़ी आज्ञा पर प्रश्न (22:34-40)

घ. मसीहा के बारे में प्रश्न (22:41-46)

ङ. अध्याय 23: यीशु यरूशलेम में: अगुवों पर सात हाय

1. नेतृत्व को उसकी चेतावनी (23:1-12)
2. उसकी सात हाय (23:13-36)
3. वह यरूशलेम पर विलाप करता है (23:37-39)

च. अध्याय 24: यीशु यरूशलेम में: इसके विनाश और अपने द्वितीय आगमन पर उसकी शिक्षा

1. यरूशलेम के विनाश की उसकी भविष्यवाणी (24:1, 2)
2. चेलों के प्रश्न (24:3)
3. यरूशलेम के विनाश से पूर्व की स्थिति (24:4-14)

क. ''भ्रमित न हो'' (24:4-8)

ख. ''अपने ऊपर कई परीक्षाएं आने के प्रति सावधान'' (24:9-14)

4. यरूशलेम का विनाश (24:15-35)

क. ''उजाड़ने वाली घृणित वस्तु देखकर भाग जाओ'' (24:15-22)

ख. ''झूठे मसीहों पर विश्वास न करो'' (24:23-28)

ग. ''मनुष्य के पुत्र का चिह्न दिखाई देगा'' (24:29-31)

घ. ''यरूशलेम का विनाश इसी पीढ़ी में होगा'' (24:32-35)

5. द्वितीय आगमन (24:36-51)

क. ''उस समय को कोई नहीं जानता'' (24:36-41)

ख. ''तैयार रहो'' (24:42-51)

छ. अध्याय 25: यीशु यरूशलेम में: समय के अन्त पर उसके दृष्टांत

1. दस कुंवारियों का दृष्टांत (25:1-13)
2. तोड़ों का दृष्टांत (25:14-30)
3. चरवाहे के भेड़ों और बकरियों को अलग करने का दृष्टांत (25:31-46)

VI. राजा की गिरफ़्तारी, पेशियां और क्रूसारोहण (26:1-27:66)

क. अध्याय 26: यीशु की गिरफ्तारी और यहूदियों के सामने पेशी

1. यीशु की हत्या का षड्यन्त्र (26:1-5)

2. यीशु का अभिषेक किया जाना (26:6-13)
3. यीशु को पकड़वाने का यहूदा का समझौता (26:14-16)
4. फसह (26:17-29)
    क. तैयारी (26:17-19)
    ख. पकड़वाने वाले की घोषणा (26:20-25)
    ग. प्रभु भोज की स्थापना (26:26-29)
5. जैतून के पहाड़ पर (26:30-46)
    क. प्रेरितों के इनकार की घोषणा (26:30-35)
    ख. निराशा का समय (26:36-38)
    ग. प्रार्थना का समय (26:39-46)
6. यीशु की गिरफ्तारी (26:47-56)
    क. पकड़वाने के लिए यहूदा का चुम्बन (26:47-50)
    ख. पतरस का तलवार का हमला (26:51-54)
    ग. यीशु की भीड़ को डांट (26:55, 56)
7. यहूदी पेशी (26:57-68)
8. पतरस के इन्कार (26:69-75)

ख. अध्याय 27: यीशु की रोमी पेशी और उसका क्रूसारोहण
1. सभा का दण्ड (27:1, 2)
2. यहूदा का पछतावा और मृत्यु (27:3-10)
3. रोमी पेशी, भाग 1 (27:11-14)
4. रोमी पेशी, भाग 2 (27:15-31)
    क. पिलातुस का प्रस्तावित समाधान (27:15-18)
    ख. भीड़ की पुकार (27:19-23)
    ग. पिलातुस का लोगों के सामने हार मानना (27:24-26)
    घ. सिपाहियों द्वारा ठट्ठा किया जाना (27:27-31)
5. मसीह का क्रूसारोहण (27:32-56)
    क. क्रूस की ओर जाना (27:32)
    ख. स्थान (27:33, 34)
    ग. क्रूसारोहण का ढंग (27:35-37)
    घ. उसके साथ क्रूस पर चढ़ाए जाने वालों द्वारा और अपमान (27:38-44)
    ड. क्रूस पर चढ़ाने का अन्त और इसे देखने वाले के चिह्न (27:45-54)
    च. स्त्रियां दूर से देखती हैं (27:55, 56)
6. मसीह की देह का दफ़नाया जाना (27:57-61)
7. पिलातुस द्वारा निरोधक आदेश (27:62-66)

VII. राजा का पुनरुत्थान और आज्ञा (28:1-20)

क. अध्याय 28: यीशु का पुनरुत्थान (28:1-15)

1. खाली कब्र (28:1-7)
2. चकित गवाह (28:8-10)
3. झूठी रिपोर्ट (28:11-15)

ख. अध्याय 28 (क्रमशः): ग्रेट कमीशन या बड़ी आज्ञा (28:16-20)

टिप्पणी

[1]अध्याय 13 की रूपरेखा आर. टी. फ्रांस, द *गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 65 से ली गई।